5

सभा गान का परिचय

सभाओं में प्रस्तुत किया जाने वाला संगीत सभा गान है। विशेष श्रोतागण के समक्ष प्रस्तुति करना तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना प्रस्तुतकर्ता पर निर्भर करता है। एक सफल प्रस्तुतकर्ता बनने के लिये उसे गायन की कठिन शिक्षा की आवश्यकता होती है। सभा गान के विषय में अध्ययन करने से पहले अभ्यास गान का अध्ययन करना आवश्यक है। सही और परिष्कृत आवाज के लिये शिक्षा स्वर अभ्यास से आरंभ होती है जैसे सरली वरीसई, जनता वरीसई, अलंकार, दत्तु स्वर, संचारी गीत, लक्षण गीत, जाति स्वर, स्वर जति और वर्ण।

यह स्वर, ताल (स्वर ज्ञानं, ताल ज्ञानं) और अन्य संगीत योग्यताओं का गहन ज्ञान विकसित करने में सहायक है। उपर्युक्त रूपों को प्राथमिक संगीत रूप भी कहते हैं। इनमें से गीतं, जाति स्वर, स्वर जति और वर्णं को कल्पित संगीत के रूपों की भांति देखा जाता है। अभ्यास गान विधा संगीत के मूल सिद्धांतों को स्पष्ट करती है जिससे कोई भी कर्नाटक संगीत के कल्पित और मनोधर्म संगीत अवस्थाओं में सरलता से जा सकता है। सभा गान में कल्पित और मनोधर्म संगीत, दोनों अवस्थायें हैं और इसमें निम्न संगीत विधायें हैं:- (1) तान वर्णं (2) कीर्तन (3) कृति (4) जावली (5) तरंगं (6) तिल्लाना

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थी:

- वर्णं को पहचानकर गा पायेगा; स्वरज्ञानं को सुधार पायेगा;
- कृति से कीर्तन विधा का अंतर बता पायेगा;
- जावली के रूप में शास्त्रीय संगीत की तुलनात्मक दृष्टि से सुगम रूप को बता पायेगा;
- तरंगं के रूप में एक सरल शास्त्रीय रूप लिख पायेगा;
- तिल्लाना के रूप में लयात्मक प्रवशत्ति युक्त संगीत विधा का वर्णन कर पायेगा;
- सभा गान की प्रत्येक संगीत विधा का विस्तार पूर्वक विवरण लिख पायेगा।

टिप्पणी

5.1 वर्ण- एक संक्षिप्त परिचय

वर्ण संगीत संसार में कहीं और नहीं होकर केवल कर्नाटक संगीत में ही विद्यमान है। वर्ण राग का व्याकरणात्मक मार्गदर्शन है जो राग के व्याकरण के लिये एक कसौटी है। वर्ण का प्रसिद्ध अर्थ रंग है जो सुसंगत नहीं है। वर्ण ऐसी रचनायें हैं जो अभ्यास गान और सभा गान दोनों में मिलती हैं। वर्ण का अभ्यास सभी संगीतज्ञों जिनमें गायक और वादक सम्मिलित हैं, के लिये आवश्यक दिनचर्या है। भरत नाट्य शास्त्र में वर्ण शब्द का प्रयोग एक गान क्रिया या मधुर गीत के रूप में किया गया है। इस काल में राग के परिचय के लिये गमक के स्थान पर स्वर प्रतिरूप अपनाये जाते थे। ये विभिन्न प्रकार के स्वर प्रतिरूप अलंकार कहलाते थे। ये अलंकार चार प्रकार के वर्णों पर आधारित हैं जो इस प्रकार हैं:-

(1) स्थायी वर्ण: स रि स; रि स स

(2) आरोही वर्ण अर्थात् आरोहन क्रम में स्वर प्रतिरूप, स रि ग रि ग म ग म प

(3) अवरोही वर्ण अर्थात् अवरोहन क्रम में स्वर प्रतिरूप, सं नि नि ध ध प

(4) संचारी: इन सभी पहले के वर्णों का मिश्रण

ऊपर दिये गये स्थायी शब्द का अर्थ है स्थिर न कि मंद्र या तार स्थायी/स्थान (निम्न/उच्च सप्तक)। एक वर्ण में न केवल रागरंजक मिश्रण अपितु विशेष संचार और कई अपूर्व प्रयोग तथा दत्तु प्रयोग जो राग स्वीकृत हैं, सम्मिलित होते हैं। वर्ण में दो अंग हैं, पूर्वांग और उत्तरांग। पूर्वांग भाग तीन विभागों में विभाजित है, यथा- पल्लवी, अनुपल्लवी और मूकस्थायी स्वर। उत्तरांग भाग के दो विभाग हैं, यथा- चरण और एत्तुगद स्वर। पूर्वांग और उत्तरांग प्राय: एक ही लंबाई के होते हैं। वर्ण का चरण अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे एत्तुगद पल्लवी, उप पल्लवी और चित्त पल्लवी। वर्ण दो प्रकार के हैं, यथा- तान वर्ण और पद वर्ण इनका उल्लेख नीचे दिया गया है। इसके अतिरिक्त एक अन्य प्रकार है जो दत्तु वर्ण कहलाता है।

5.1.1 तान वर्ण

तान वर्ण सभा गान के आरंभ में गाई अथवा बजाई जाने वाली रचना है। इन वर्णों का अभ्यास सामान्यतया गीत और स्वर जति के अध्ययन के पश्चात किया जाता है।

इस प्रकार के वर्ण में तान जति प्रकार के स्वर व्याक्यांश होते हैं अत: इसे तान वर्ण कहते हैं। तान वर्ण में केवल पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण भागों में ही साहित्य होता है। अन्य भाग सोल्फा पद्यांश की भांति गाये जाते हैं। यह वर्ण सभा गान के आरंभ में गाने के लिये चुना जाता है क्योंकि यह आवाज को लंबे समय तक स्थिर रखने तथा तीनों सप्तक में वाक्यांश गाने में सहायक होता है। यह गायक को सफलतापूर्वक सभा गान में प्रस्तुति के लिये तैयार करता है।

तान वर्ण के कुछ प्रसिद्ध रचयिता हैं :

पच्चीमिरयं अदियपैया, वीना कुप्पय्यर, पल्लवी गोपाल अय्यर, मनमबुचवदि वर्णं सुब्बय्यर, स्वाति तिरुनल, मुत्तुस्वामी दीक्षितर, श्यामा शास्त्री, पटनं सुब्रमन्य अय्यर, रामनद श्रीनिवास अय्यंगर, व्यंकटराम अय्यर तान वर्णं के कुछ प्रसिद्ध रचयिता हैं।

तान वर्णं के कुछ उदाहरण उनके राग और ताल सहित नीचे दिये गये हैं:

1. वीरिबोनी- भैरवी रागं- अता ताल- पच्चीमिरयं अदियपैया
2. कनकंगी- तोड़ी रागं- अता ताल- पल्लवी गोपाल अय्यर
3. वनजाक्षी- कल्याणी रागं - आदि ताल- पल्लवी गोपाल अय्यर
4. इंतचलमु- बेगड रागं -आदि ताल- वीना कुप्पय्यर
5. एव्वरी बोधन- आभोगी रागं- आदि ताल- पटनं सुब्रमन्य अय्यर
6. निन्नु कोरी- मोहन रागं-आदि ताल- रामनद श्रीनिवास अय्यंगर
7. जलजाक्ष- हंसधवनी रागं-आदि ताल- पटनं सुब्रमन्य अ"यर

5.1.2 पद वर्णं

पद वर्णं को चौक वर्णं तथा अता वर्णं भी कहते हैं। यह वर्णं एक नृत्य का रूप है और सामान्यतया नृत्य समारोहों में सुना जाता है। संपूर्ण रचना में साहित्य होता है। इस रचना में संगीत की गति धीमी होती है तथा इसका उद्देश्य नर्तक को साहित्य भाव दर्शाने का पूर्ण अवसर प्रदान करना है। पद वर्णं में नृत्त स्वर भाग में और अभिनय साहित्य भाग में किया जाता है। पद वर्णं के कुछ प्रसिद्ध रचयिता हैं:-

गोविंदरमय्या, रामास्वामी दीक्षितर, मुत्तुस्वामी दीक्षितर, पटनं सुब्रमन्य अय्यर, स्वाति तिरुनल, रंगस्वामी नट्टुवानर, मैसूर सदाशिव राव, पोनैया पिल्लै और सुब्बराम दीक्षितर पद वर्णं के कुछ प्रसिद्ध रचयिता हैं।

पद वर्णं के कुछ उदाहरण:-

1. रूपमु जूचि- तोडी रागं- आदि ताल- मुत्तुस्वामी दीक्षितर
2. एला नान्नेनचेवु- पूर्नचंद्रिका रागं- चतुरस्र रूपक ताल- रामास्वामी दीक्षितर
3. चलमेल- नटकुरंजी रागं- आदि ताल- रंगस्वामी नट्टुवानर
4. सामिनीन्न- अटाना रागं- अता ताल- पटनं सुब्रमन्य अय्यर

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 5.1

1. आदि ताल में तान वर्ण के दो रचयिताओं के नाम बताइये।
2. वर्ण कितने प्रकार के हैं? नाम बताइये।
3. वर्ण के क्या अंग हैं?
4. उत्तरांग के विभाग क्या हैं?
5. पद वर्ण के दो प्रसिद्ध रचयिताओं के नाम बताइये।
6. पद वर्ण का दूसरा नाम क्या है?

5.2 कीर्तन

कीर्तन कृति से अधिक प्राचीन है जो अन्य संगीत विधा है। कृति शब्द उस रचना का उल्लेख करता है जिसका महत्त्व विशेषतया उसके संगीत में है न कि उसके साहित्य में। परंतु कीर्तन में साहित्य का प्रमुख महत्त्व है। वास्तव में कृति कीर्तन का एक विकसित रूप है। कीर्तन का जन्म लगभग 14वीं शताब्दी के मध्य के उपरांत हुआ है। तालपकं रचयिता (1400–1500) प्रथम थे जिन्होंने कीर्तन शब्द का प्रयोग किया और पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण भागों सहित कीर्तन लिखे। कीर्तन का संगीत और लय दोनों सरल है। यह व्यवहारिक संगीत से संबन्धित है। यह बहुत छोटा और सरल भी होता है और विद्यार्थी द्वारा सरलता से सीखा जा सकता है। कीर्तन की मुख्य विशेषता भक्ति रस की उत्पत्ति या भक्ति की भावना है, अत: कीर्तन एक धार्मिक विधा है। इसका साहित्य और गीत भक्तिपूर्ण या पौराणिक विषय पर आधारित होते हैं। कई कीर्तन सामान्यतया ईश्वर की महानता की प्रशंसा में हैं। कीर्तन में कई शब्द होते हैं और सभी चरण उसी धातु (स्वर) में गाये जाते हैं। उदाहरण के लिये, यदुकुलकांबोजी राग में त्यागराज का श्री राम जय राम का दिव्य नाम कीर्तन और पुन्नगवराली राग में तव दसोहम इस प्रकार के उदाहरण हैं।

कुछ कीर्तनों में चरणों में पल्लवी के समान संगीत है। अनुपल्लवी कीर्तन में एक अनावश्यक अंग है। कीर्तन में कुछ चरणों का होना उसका एक विशेष लक्षण है। कीर्तन में चित्त स्वर और स्वर साहित्य जैसे सजावटी अंग नहीं मिलते हैं, परंतु कई बार मध्यमकला साहित्य कीर्तन में मिल जाता है। समुदाय कृति की भांति समुदाय कीर्तन भी होते हैं जैसे त्यागराज के दिव्य नाम कीर्तन, उत्सव संप्रदाय कीर्तन और स्वाति तिरूनल के नवराती कीर्तन।

5.2.1 दिव्य नाम कीर्तन

त्यागराज ने कई दिव्य नाम कीर्तनों (गीत जिनमें ईश्वर के नाम और उसकी प्रशंसा होती है, जो सामान्यतया भजनों में गाये जाते हैं) की रचना की है। दिव्य नाम कीर्तन दो प्रकार के होते हैं, यथा, एकधातु प्रकार और द्विधातु प्रकार।

1. एकधातु प्रकार: इस प्रकार के गायन में पल्लवी और चरण एक ही धातु अथवा स्वर में गाये जाते हैं। उदाहरण के लिये:- त्यागराज द्वारा रचित श्री राम जयराम- यदुकुलकांबोजी रागं, तव दसोहं- पुन्नगवराली रागं- आदि ताल।

2. द्विधातु प्रकार: इस प्रकार के गायन में चरण का संगीत पल्लवी से भिन्न होता है। उदाहरण के लिये: त्यागराज द्वारा रचित श्री राम जयराम- सहाना रागं, पही रामचंद्र पलित सुरेन्द्र- शंकराभरन रागं।

5.2.2 उत्सव संप्रदाय कीर्तन

त्यागराज ने उत्सव संप्रदाय कीर्तनों की भी रचना की है। प्रशंसा की धारणा कुछ प्रणालियों या उपचारों के द्वारा ईश्वर का आह्वान करना है और वह विशेष रचना जो इन उपचारों के साथ गाने के लिये प्रस्तावित हुई उसे उत्सव संप्रदाय कीर्तन कहा जाता है। इस प्रकार की 24 रचनायें हैं।

कीर्तन के कुछ प्रमुख रचयिता निम्नलिखित हैं:

पुरंदर दास, भद्रचल रामदास, तल्लपक अन्नमचार्य, त्यागराज, गोपाल ख्रष्ण भारती, अरुणाचल कविरयर, चंगलवरय शास्त्री और कविकुंजर भारती।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. कीर्तन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया?
2. कीर्तन में किस प्रकार का साहित्य प्रयुक्त होता है?
3. कीर्तन का विशेष लक्षण क्या है?
4. दिव्य नाम कीर्तन की रचना किसने की?
5. दिव्य नाम कीर्तन के गाने के तरीकों का विवरण दीजिये।
6. कीर्तन के तीन भाग कौन से हैं?
7. कीर्तन के दो प्रमुख रचयिताओं के नाम बताइये।

5.3 कृति

कृति वह रचना है जिसका महत्त्व उसके साहित्य की अपेक्षा उसके संगीत में है। सभा गान में कृतियों की प्रमुख भूमिका है। यह मेजर, माइनर, वक्र और विवादी रागों में रची गयी है। इसमें पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण होते हैं। कुछ कृतियों में अधिक चरण, समष्टी चरण, मध्यम कला

टिप्पणी

साहित्य, कई संगतियां, चित्त स्वर, स्वर साहित्य, सोलकट्टु स्वर और साथ ही होती हैं। कृतियां सभी तालों में रची जाती हैं। कृतियां तेलुगु, संस्कृत, तमिल, मलयालम इत्यादि में रचित हैं। प्रमुख रचयिता संगीत की त्रिमूर्ति, स्वाति तिरुनल, जयचमराजेंद्र वाडेयर, वीना कुपय्यर, पटनं सुब्रमन्य अय्यर, मैसोर सदाशिव राव, मुथैया भगवतर, मैसोर वासुदेवाचार्य इत्यादि हैं। कीर्तन की अपेक्षा कृति भले ही प्रकृति में धार्मिक न हो क्योंकि यह दार्शनिक विचारों या संरक्षण इत्यादि का वर्णन करती है।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. कृति क्या है?
2. कृति के सजावट अंग क्या हैं?
3. कृति के तीन रचयिताओं के नाम बताइये।
4. राजवंशी रचयिता कौन हैं?

5.4 पदम

पदम एक विशिष्ट रचना है जो सामान्यतया संगीत और नृत्य सभाओं दोनों के लिये प्रयुक्त होती है। यह रचना संगीत में सघन और गति में धीमी है क्योंकि नृत्य सभाओं में प्रयुक्त होने के कारण यह भाव को महत्त्व देती है। इसके विभाग हैं जैसे पल्लवी, अनुपल्लवी और विविध चरण। पदम की विषय वस्तु 'मधुर भक्ति', अर्थात प्रेम से परिपूर्ण भक्ति है। परोक्ष रूप से इसका जीवात्मा-परमात्मा के संबन्धों के साथ आचरण है। प्रसिद्ध पदम रचयिता सारंगपाणी, घनं चिन्नय्या, सभापति, क्षेत्रज्ञ, घनं कृष्ण अय्यर, सुब्बराम अय्यर, स्वाति तिरुनल तथा इरयिम्मन थंपी हैं।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. पदम की विषय वस्तु क्या है?
2. दो प्रसिद्ध पदम रचयिताओं के नाम बताइये।
3. पदम में क्या विभाग हैं?

5.5 जावली

जावली कर्नाटक संगीत के सबसे अधिक प्रसिद्ध रूपों में से एक है। यह संगीत रचना सामान्यतया संगीत सभा के पल्लवी अंश के पश्चात गायी जाती है। जावली नाम कन्नड़ शब्द जावडी से लिया

गया है जिसका अर्थ प्रेम काव्य का गीत है। सामान्यतया संगीत मध्यमकला या मध्यम गति में होता है। जावली का जन्म 19वीं शताब्दी में त्रिमूर्ति काल के बाद हुआ। जावली संगीत और नृत्य सभाओं में प्रचलित सजीव और सुगम शास्त्रीय संगीत रचनायें हैं। नायक, नायिका और सखी द्वारा गायी गई जावली रचनायें हैं। जावली की धुनें बहुत आकर्षक और लय युक्त होती हैं जो नृत्य सभाओं के लिये भलीभांति अनुकूल होती हैं। नर्तक ऐसी रचनाओं के लिये अच्छा अभिनय कर सकता है। जावली तेलुगु, कन्नड़, तमिल और मलयालम भाषाओं में उपलब्ध हैं। सामान्यतया जावली आदि, रूपक और चापु ताल में बद्ध होते हैं। जावली के तीन विभाग हैं, यथा, पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण। चरण एक या अधिक हो सकते हैं। कुछ जावली में अनुपल्लवी नहीं होती है। उदाहरण के लिये 'आदिनीपई मरुलुकोन्नडी'– यमुनाकल्याणी रागं।

कुछ प्रसिद्ध जावली निम्नलिखित हैं:–

1. आदिनीपई मरुलुकोन्नडीर– यमुनाकल्याणी रागं– आदि तालं
2. चेलीनेनेत्लू साहिन्तुन– फराज रागं– आदि तालं
3. अपादुरुकुकलोनैतिनी– खमाज रागं– आदि तालं
4. वेगनीवु वानी रामानव– सुरति रागं– आदि तालं
5. इतुसहसमुलो न्यायम– सैंधवी रागं– आदि तालं

जावली के प्रमुख रचयिता और उनके हस्ताक्षर या मुद्रा नीचे दिये गये हैं:–

1. धर्मपुरी सुब्बरायर – (मुद्रा–धर्मपुरी)
2. पट्टभीरमय्या – (मुद्रा– तालवनेस)
3. स्वाति तिरुनल – (मुद्रा– पद्मनाभ)
4. पटनं सुब्रमन्य अय्यर– (मुद्रा– व्यंकटेश)
5. विद्याला नारायणस्वामी– (मुद्रा– तिरुपतिपुर)
6. रामनद श्रीनिवास अय्यंगर– (मुद्रा– श्रीनिवास)

पाठगत प्रश्न 5.5

1. जावली की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है?
2. जावडी का अर्थ क्या है?
3. पट्टभीरमय्या और स्वाति तिरुनल की जावली रचनाओं में उनकी क्या मुद्रायें हैं?
4. जावली के तीन विभाग कौन से हैं?

टिप्पणी

5. सामान्यतया जावली की रचना किन भाषाओं में की जाती है?

6. जावली के तीन प्रसिद्ध रचयिताओं के नाम बताइये।

5.6 तरंगं

संगीत सभा में तरंगं को पल्लवी के बाद की रचना की भांति प्रस्तुत किया जाता है। इनका मुख्य विषय भगवान कृष्ण की प्रशंसा होती है। नृत्य में इसकी निरंतर प्रस्तुति होती है।

रचयिता नारायण तीर्थ ने कृष्ण लीला तरंगिनी के नाम से कई तरंगों की रचना की है। ये तरंगं निरंतर एक स्थिर राग में नहीं होते हैं। कुछ तरंगं पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणं की बनावट का पूर्णत: अनुसरण नहीं करते हैं। आंध्र प्रदेश में इन तरंगों का धार्मिक समारोहों में गाने का बहुत प्रचार है जहां मुख्य गायक तरंग को प्रस्तुत करते समय कुछ नृत्य करता है। तमिल नाडु में भजनों में तरंगं अवश्य होते हैं।

कुछ प्रसिद्ध तरंगं हैं:-

माधव मामव- नीलांबरी राग- आदि ताल

गोवर्धन गिरधर- दरबारी कनड राग- आदि ताल

पुरया मम कामं- बिलहरी राग- आदि ताल

बृंदावनं- मुखारी राग- आदि ताल

पाठगत प्रश्न 5.6

1. संगीत सभा में तरंगं कब गाया जाता है?
2. तरंगं मुख्यतया किस ईश्वर पर रचित हैं?
3. कृष्ण लीला तरंगं का रचयिता कौन था?
4. दो प्रसिद्ध तरंगों के नाम बताइये।
5. सामान्यतया तरंगं को किस अवसर पर गाया जाता है?

5.7 तिल्लाना

तिल्लाना लघु, स्फूर्तिदायक और सजीव संगीत विधाओं में से एक है, जिसका उद्भव 18वीं शताब्दी में हुआ था। तिल्लाना तीन लयात्मक शब्दांशों से बना है- ति-ल-न। यह विधा अपने स्फूर्तिपूर्ण और आकर्षक संगीत के कारण प्रचलित हुई। सामान्यतया इसकी गति मध्यमकला में होती है।

इस रूप में पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण विभाग हैं और प्रत्येक विभाग में विभिन्न धातु हैं। सामान्यतया पल्लवी और अनुपल्लवी में केवल जति होती है और चरण में जति के अतिरिक्त साहित्य और सोल्फा शब्दांश होते हैं। तिल्लाना का साहित्य संस्कृत, तेलुगु या तमिल में मिलता है। तिल्लाना आदि और रूपक ताल में रचित हैं। कुछ तिल्लाना 24 अक्षरकाल युक्त लक्ष्मीसा जैसी कठिन तालों में भी हैं। यह ताल 108 तालों में से एक है। रामनद श्रीनिवास अय्यंगर ने एक तिल्लाना लक्ष्मीसा तालं में रचा है। इस विधा को संगीत सभा में पल्लवी के बाद की रचना के रूप में गाया जाता है। इसकी स्फूर्तिपूर्ण गति और सजीव जतियां आनंददायक हैं। तिल्लाना संगीत और नृत्य समारोहों में गाया जाता है और नृत्य में इसकी निरंतर प्रस्तुति होती है। गानक्रम या प्रस्तुत करने का तरीका संगीत तथा नृत्य सभाओं में एक जैसा नहीं होता है। संगीत सभा में एक पंक्ति दो से अधिक बार नहीं दोहराई जाती है जबकि नृत्य सभाओं में यह कई बार दोहराई जा सकती है। इस प्रकार का दोहराना नर्तक के पैरों के विविध प्रकार के संचालनों में प्रत्येक पंक्ति की लयात्मक बनावट के अनुरूप प्रदर्शन करने में सहायक है। इस विधा का प्रचार मूलत: लयात्मक सोला शब्दांश त-क-त-रि-किट-नक की उपस्थिति के कारण है। तिल्लाना हिंदुस्तानी संगीत के तराना के अनुरूप है।

रागमालिका तिल्लाना, प्रचलित तिल्लाना और विद्वत्तापूर्ण तिल्लाना भी होते हैं। महा वैद्यनाथ अय्यर ने सिर्नृहनंदन ताल में विद्वत्तापूर्ण तिल्लाना की रचना की है जिसमें गौरी नायक के शब्द से आरंभ होकर कनड राग में 108 अक्षर काल हैं। पटनं सुब्रमन्य अय्यर और रामनद श्रीनिवास अय्यंगर जैसे कुछ रचयिताओं ने तिल्लाना को घन राग जैसे शंकराभरन और तोडी और इसके अतिरिक्त परंपरागत रक्ति राग सेन्जुरति, फराज, कनड और मोहनं में रचा है। आधुनिक रचयिता जैसे श्री लालगुडी जयरमन और डा. बालमुरली कृष्ण ने तिल्लाना में प्रगतिशीलता का समावेश किया है। इनके तिल्लाना में लयात्मक प्रतिरूप और तालयुक्त संगीत का मेल है। ये तिल्लाना सभी प्रकार के श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करने योग्य हैं यहां तक कि वाद्य पर बजाये जाने पर भी।

तिल्लाना के कुछ प्रसिद्ध रचयिता:-

स्वाति तिरुनल, पोनय्या, पल्लवी शेषाय्यर, मैसोर सदाशिव राव, वीना सेषन, पटनं सुब्रमन्य अय्यर, रामनद श्रीनिवास अय्यंगर और मुतय्या भगवतर तिल्लाना के प्रसिद्ध रचयिता हैं।

कुछ प्रसिद्ध तिल्लाना:-

गीत धुन की तक धीम नदरु किट तोम- धनाश्री राग- आदि ताल- स्वाति तिरुनल

ताम ताम ताम ओदनी तोम तननं- खमाज राग- आदि ताल- पटनं सुब्रमन्य अय्यर

धीमतन तारे धीरन- बेहाग राग- आदि ताल- मुतय्या भगवतर

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 5.7

1. तिल्लाना किन शब्दांश से बना है?
2. तिल्लाना किस शताब्दी में उत्पन्न हुआ?
3. लक्ष्मीसा ताल में रचित तिल्लाना के रचयिता का नाम बताइये।
4. तिल्लाना हिंदुस्तानी संगीत की किस विधा के अनुरूप है?
5. तिल्लाना के विभागों के नाम बताइये।
6. तिल्लाना इतने प्रसिद्ध क्यों हैं?
7. तिल्लाना के दो प्रसिद्ध रचयिताओं के नाम बताइये।

आपने क्या सीखा

सभा गान कर्नाटक संगीत के प्रस्तुतिकरण के भाग में आता है जहां वर्ण, कृति, पदं, जावली, तिल्लाना, तरंगं, कीर्तन आदि संगीत विधायें प्रस्तुत की जाती हैं। इनमें से कुछ समरूप सभा नृत्यों के लिये भी प्रयुक्त होते हैं। ये हैं पदं, जावली, तिल्लाना आदि। इन संगीत विधाओं में कृति सभागान में श्रेष्ठ श्रेणी में आती है जहां कार्यक्रम का प्रमुख भाग राग स्वर आलापनं, स्वर कल्पना, निरावल आदि की भांति मनोधर्म संगीत सहित कृति द्वारा अधिकृत है। संगीत त्रिमूर्ति के काल में कृति विधा प्रशंसा प्राप्त कर चुकी थी। हल्की संगीत विधायें जैसे पदं, जावली, तिल्लाना, तरंगं, कीर्तन आदि सभा गान के अंत में आती हैं।

पाठांत अभ्यास

1. सभा गान पर एक टिप्पणी लिखिये।
2. कर्नाटक संगीत में कितने प्रकार के वर्ण हैं बताइये।
3. कीर्तन और कृति में क्या अंतर है?
4. जावली क्या है? कुछ प्रसिद्ध जावली और कुछ प्रमुख रचयिताओं के नाम लिखिये।
5. तिल्लाना पर एक अनुच्छेद लिखिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. पटनं सुब्रमन्य अय्यर और रामनद श्रीनिवास अय्यंगर
2. दो प्रकार: तान वर्ण तथा पद वर्ण
3. पूर्वांग तथा उत्तरांग
4. चरण तथा एत्तुकदई
5. मुत्तुस्वामी दीक्षितर तथा रामास्वामी दीक्षितर
6. चौक वर्ण तथा अता वर्ण

5.2

1. तालपकं रचयिता
2. भक्ति प्रकार
3. कई चरणों का होना
4. त्यागराज
5. एक धातु, द्वि धातु
6. पल्लवी, अनुपल्लवी, चरणं
7. पुरंदर दास और भद्रचल रामदास

5.3

1. कृति वह रचना है जिसका महत्त्व प्रमुख रूप से उसके संगीत में है।
2. सजावट अंग संगतियां, चित्त स्वर, स्वर साहित्य, सोलकट्टु स्वर और मुद्रायें हैं।
3. त्यागराज, स्वाति तिरुनल, मैसोर वासुदेवाचार्य
4. स्वाति तिरुनल और जयचमराजेंद्र वाडेयर

टिप्पणी

5.4

1. मधुर भक्ति जो प्रेम सहित पवित्र भक्ति है
2. क्षेत्रज्ञ, स्वाति तिरुनल
3. पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण

5.5

1. कन्नड़ शब्द जावडी
2. प्रेम काव्य
3. धर्मपुरी और पद्मनाभ
4. पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण
5. तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और मलयालम
6. पटनं सुब्रमन्य अय्यर, धर्मपुरी सुब्बरायर और स्वाति तिरुनल

5.6

1. पल्लवी के बाद की रचना की भांति
2. भगवान कृष्ण
3. नारायण तीर्थ
4. गोवर्धन गिरधर, पुरया मम कामं
5. धार्मिक समारोह

5.7

1. तीन लयात्मक शब्दांशरू ति-ल-न
2. 18वीं शताब्दी
3. रामनद श्रीनिवास अय्यंगर
4. तराना
5. पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण

6. लयात्मक सोल्फा शब्दांश त-क-त-रि-किट-नक की उपस्थिति के कारण
7. स्वाति तिरुनल और पटनं सुब्रमन्य अय्यर

निर्देशित कार्य कलाप

1. विद्यार्थियों को पांच सभा गानों को सुनना चाहिये।
2. विद्यार्थियों को 3 गतियों में अधिक अभ्यास करना चाहिये।
3. विभिन्न राग और ताल में कृति और कीर्तनों का अभ्यास करना चाहिये।
4. जावली और तिल्लाना सीखने चाहिये।